साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 2, अंक 37, मई(द्वितीय), 2018

---।।अगस्त्याश्रमः अगस्त्यमुनि।।---

शम्भु प्रसाद भट्ट'स्नेहिल'

अगस्त्यो भगवान्विष्णु स्तमभ्यर्च्या$$न्नुयाद्धरिम्।

अगस्त्य ऋषि साक्षात् भगवान् विष्णु ही हैं, अतः जो भी जन इनकी पूजा-अर्चना करता है, उसकी निश्चित ही वैकुण्ठ धाम प्राप्ति सुनिश्चित हो जाती है।

अग्निपुराण।

अगस्त्य ऋषि महाराज की हो सदा जय।
पर्व वैशाखी पर मिलती भक्तों को विजय।।
÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷

अगस्त्य ऋषि की परम पावन पवित्र तपःस्थली अगस्त्यमुनि जग प्रसिद्ध धाम केदारनाथ मार्ग तथा अलौकिक व अद्वितीय प्राकृतिक सुंदरता से परिपूर्ण मंदाकिनी घाटी का धर्म व आस्था के साथ-साथ जनपद रूद्रप्रयाग का एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण स्थान है। यह बताना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि अगस्त्यमुनि उत्तराखंड राज्य के जिला रूद्रप्रयाग का वह एक मात्र स्थान है, जहाँ पर जनपद स्तरीय क्रियाकलापों के साथ-साथ प्रांतीय कार्यक्रमों के सफलतापूर्वक संपादन हेतु भौगोलिकता के साथ कृत्रिमता के आधार पर उपयुक्त सुविधा प्राप्त हैं, यहाँ का विशाल मैदान पूर्व काल से ही इस स्थान की अनौखी व ऐतिहासिक पहिचान व विरासत है। वर्तमान में यह मैदान खेल-कूद निदेशालय के शासकीय नियंत्रणाधीन है।

समुद्र तल से लगभग 1000 मी0 की ऊँचाई पर स्थित इस अगस्त्यमुनि नामक स्थान में पौराणिक काल में तत्कालीन महान् ऋषि अगस्त्य दक्षिण भारत से तीर्थ भ्रमण करते हुए देश के अनेकानेक पावन स्थलों के दर्शन किये, प्रभु शिवशंकर की इस पवित्र घाटी में आकर इस स्थान को धर्म व आध्यात्मिकता के लिए अत्यंत उपयुक्त समझकर प्रथमतः मंदाकिनी नदी पार सिला नामक स्थान में कुछ समय तक साधनारत रहे, कालांतर में यहाँ विशाल मैदान के निकट अपना साधना का स्थान सुनिश्चित कर दैनिक पूजा अर्चना हेतु आशुतोष भगवान् शिवशंकर के लिंग रूप में स्थापना की। जिसे कालांतर में यह शिवलिंग अगस्त्येश्वर महादेव के नाम से पुकारा जाने लगा।

"मंदाकिन्याः पूर्वतटे कुम्भजन्माश्रमः प्रिये।
तत्र नित्यं कुम्भवो मत्यपूजनपरारणः।।"

ऋषि अगस्त्य की पावन तपस्या स्थली होने के कारण इस अगस्त्येश्वर महादेव के तीर्थ स्थल को वर्तमान में अगस्त्यमुनि के नाम से जाना जाता है। घड़े से जन्म लेने के कारण अगस्त्य ऋषि जी का एक नाम कुम्भज भी है अर्थात् कुम्भ = घड़ा, ज = जन्म।

पुराणों के आख्यान तथा स्नेहिल द्वारा लिखित पुस्तक "श्री कार्तिकेय दर्शन" में उल्लिखित विवरणानुसार कहा जाता है कि- राक्षसराज तारकासुर के वध के उपरांत ऋषि अगस्त्य के साथ संसार के महानतम तीर्थ स्थानों का भ्रमण किया, जिसमें अधिकांशतः दक्षिण भारतीय स्थान रहे हैं, ऋषि संग तीर्थ भ्रमण करते हुए कुमार कार्तिकेय द्वारा जहाँ-जहाँ भी विराम/विश्राम कर साधना की गई वे स्थान वहाँ के पावन तीर्थ बन गये। प्रामाणिकता यह है कि प्रभु कार्तिकेय की जितनी आराधना घर-घर दक्षिण भारत में की जाती है, उसकी अपेक्षा में उतर भारत में कम की जाती है। दक्षिण में इन्हें सुब्रह्मण्यम्, मोर्गम् स्वामी के नाम से जाना जाता है।

ऐतिहासिक विवरणानुसार जब कुमार कार्तिकेय अपने पारिवारिक घटनाक्रम के कारण मां-बाप अर्थात् माँ पार्वती व पिता भोले शंकर से रूष्ट होकर क्रौंच पर्वत की ओर जा रहे थे, तो वे ज्ञानार्जन हेतु कुछ समय इसी स्थान पर रूके और ऋषि अगस्त्य जी से दिव्य ज्ञान प्राप्त किया। तत्पश्चात् महर्षि अगस्त्य से ज्ञान प्राप्त करके ये मणि नामक गुफा, जिसे वर्तमान में मणिगुह नाम से एक गाँव के रूप में जाना जाता है। फिर कार्तिकेय जी निकटतम पर्वत शिखर क्रौंच पर जाकर तपोस्थित हो गये।

एक और पौराणिक घटनाक्रम के मुताबिक-प्राचीन काल में पर्वत सजीव प्राणियों की तरह एक स्थान से दूसरे स्थान को गतिमान तथा अपना आकार छोटा-बड़ा करने की क्षमता से संपन्न रहते थे। कहते हैं कि एक बार विंध्याचल पर्वत का घमंड इतना अधिक बढ़ गया कि उसने अपना आकार ऊँचा कर भगवान् सूर्य नारायण के गतिमान रथ को ही रोक दिया, जिससे ब्रह्मांड की ऊर्जा का स्तर अव्यवस्थित होने लगा। इससे परेशान देव-ऋषिगण जब कोई उपाय न ढूँढ पाये तो तब वे परम तेजस्वी, प्रतापी महर्षि अगस्त्य के पास आये, जो स्वयं विंध्याचल पर्वत के गुरू भी थे, उनसे पर्वतराज के मानमर्दन की प्रार्थना की। महर्षि अगस्त्य उनके साथ विंध्य पर्वत की तलहटी में जैसे ही पहुँचे, तो विंध्य पर्वत ने अपने गुरू के सम्मान में अपना ऊच्च शीश झुकाया। जैसे ही पर्वत ने सिर नीचे किया, तो दूसरी ओर रूका पड़ा सूर्य नारायण का रथ आगे बढ़ गया।

इस प्रकार महर्षि अगस्त्य के प्रभाव से संसार चक्र पुनः गतिमान हुआ। भयानक संकट टल गया। कहते हैं कि ऋषि अगस्त्य ने पर्वतराज को आदेश दिया कि मैं विभिन्न तीर्थ स्थानों की यात्रा हेतु जा रहा हूँ और जब तक मैं यात्रा से वापस न आ जाऊँ तब तक तुम इसी स्थिति में झुके रहना। और तब से ऋषि अभी देश के विभिन्न स्थानों सहित दक्षिण की यात्रा पर ही हैं और विंध्याचल पर्वत शीश झुकाये प्रतीक्षारत है।

अगस्त्य ऋषि का यह स्थान मंदाकिनी का सबसे केंद्रीय स्थल व विशाल मैदान तथा साथ ही महर्षि अगस्त्य का पावन तीर्थ एवं समीप गंगा स्नान का लाभ प्राप्ति पवित्र मंदाकिनी नदी का तट होने के कारण हमारे पूर्वजों द्वारा इस स्थान में आपसी मेल-मिलन हेतु तिथि निर्धारित की गई, जिसमें एक-दूसरे से मुलाकात के साथ-साथ देव-दर्शनों का पुण्य लाभ भी अर्जित करते रहते थे।

अगस्त्य ऋषि के मंदिर परिसर में विभिन्न देव व ऋषिगणों की मूर्तियां उकेरी गई हैं, पूर्वकाल में यह मंदिर दक्षिण भारतीय शैली में बनाया गया मंदिर था, जिसे कालांतर में परिवर्तित कर नया व वर्तमान स्वरूप दिया गया है। जो आज भव्यता की पहिचान बना हुआ है। मंदिर की मुख्य पूजा यहाँ के स्थानीय गाँव बेंजवाल जाति के ब्राह्मणों द्वारा की जाती आ रही है।

यहाँ पर हिन्दू शास्त्रानुसार सूर्य नारायण का मीन राशि से प्रथम राशि मेष में प्रविष्ठ होने के दिवस तथा भूगोल शास्त्र के मतानुसार सूर्य की परिक्रमा करते हुए पृथ्वी का भूमध्य रेखीय भाग जब सूर्य के ठीक सीध में आ जाय अर्थात् जब सूर्य की किरणें पृथ्वी की भूमध्य रेखा याने विशुवत् रेखा पर सीधी पड़े, तो उस दिन को स्थानीय जन "विखोती" और विशुवत् रेखा संक्रमण के कारण "वैशाखी" नाम से और विशाखा नक्षत्र की पूर्णिमा के कारण वैशाख मास, तथा इस मास के प्रथम दिवस को संक्रांति के रूप में धूमधाम से मनाया जाने लगा। ऋतुराज बसंत की अनुपम छटा बिखरी प्रकृति के अलौकिक

दृश्यों के मध्य मेले के बहाने अपनों से मिलन का आयोजन अत्यंत सुहावना हो जाता हो। वास्तव में मेला आयोजन का मूल उद्देश्य भी आपसी मेल-मिलन ही है। इन मेलों की पौराणिक व ऐतिहासिक परम्परा को बनाये रखना सरकार का दायित्व तो है ही उससे भी अधिक हम सबका अधिक कर्तव्य बनता है कि हम अपने व्यवहार से इन्हें निर्विघ्नतया संपन्न करायें।

वास्तव में अगस्त्यमुनि का यह मेला पुरा-प्राचीन कालिक है, जिसका धार्मिक व आध्यात्मिक माहात्म्य व उद्देश्य है। वैसे तो आजकल इस स्थान पर विगत कुछ वर्षों से नवम्बर माह के प्रारंभिक दिनों में तीन दिवसीय मेले आयोजित हो रहा है, जिसका धार्मिकता व आध्यात्मिकता से दूर-दूर तक कोई रिश्ता नहीं है। हाँ! आधुनिकता व राजनैतिकता का अद्भुत संगम इसमें अवश्य प्रभावी है। यह भी अच्छा ही प्रयास है, चाहे पहले हों या बाद के, लेकिन मेले-उत्सव अवश्य ही होने चाहिए, ताकि विकास की छवि दिखे, और साथ ही अपनों से मुलाकात भी हो सके।

महर्षि अगस्त्य का यह पावन तीर्थ अगस्त्यमुनि उत्तराखंड राज्य के जनपद रूद्रप्रयाग मुख्यालय से केदारनाथ पहुँच राष्ट्रीय राजमार्ग के मध्य लगभग 16 किमी की दूरी पर मन्दाकिनी घाटी में स्थित है। वर्तमान में अगस्त्यमुनि का विस्तार सिल्ली से लेकर विजयनगर, जवाहरनगर, बेड़ूबगड, सौड़ी तक लगभग 05 से 06 किमी के दायरे में हो चुका है। इसे रूद्रप्रयाग जिले का हृदय स्थल कहा जाय तो उपयुक्त ही होगा। केदारधाम तीर्थ यात्रा मार्ग पर स्थित होने के कारण यहाँ का माहात्म्य कई अधिक आंका जाता है। यहाँ से केदारधाम यात्रा हेतु सीधी हवाई सेवा भी यात्रा काल में विभिन्न हेलिकॉप्टर सेवा कंपनियों द्वारा संचालित की जाती है। यात्रियों की आवश्यकता के अनुरूप आवासीय सुविधा आदि से यह नगर पूर्ण सुसज्जित है। दर्शन लाभ प्राप्त करके जीवन यात्रा में एक अध्याय यह भी अवश्य अंकित होगा।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें